IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर अभिभावक–प्रोत्साहन के प्रभाव का अध्ययन

भावना शर्मा[1]
शोधार्थिनी (शिक्षाशास्त्र)
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

डॉ० अनुराधा सुपेकर[2]
पीएच०डी० (विभागाध्यक्ष)
शोध केन्द्र महाराजा महाविद्यालय
उज्जैन मध्य प्रदेश

सारांशः– वर्तमान समय में अभिभावकों के स्नेह के अभाव के कारण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता घटती जा रही है, यदि विद्यार्थियों को अभिभावक अधिक प्रोत्साहित करते हैं तो विद्यार्थियों में सृजन करने की शक्ति अधिक उत्पन्न होगी। अभिभावक प्रोत्साहन के अभाव में विद्यार्थी शारीरिक रूप से तो विकसित हो जाते है परन्तु उनकी सृजनात्मकता में कमी रह जाती है। सृजनात्मकता के अभाव में ऐसे विद्यार्थी समाज, परिवार व सहपाठियों में शामिल नहीं हो पाते हैं। सृजनात्मकता की कमी के कारण विद्यार्थी अपनी रूचियों, इच्छाओं, खुशियों को प्रकट नही कर पाते है। इसी कारण उनकी सृजनात्मकता में विकास सही रूप से नही हो पाता है। सृजनात्मकता के अभाव में ऐसे विद्यार्थियों को हीन दृष्टि से देखा जाता है और वे अपने आप को अपमानित महसूस करते है। जिन विद्यार्थियों में सृजनात्मकता की कमी होती है ऐसे विद्यार्थियों के साथ अन्य विद्यार्थी साथ नही रहना चाहते है इस प्रकार की स्थिति में विद्यार्थी का मनोबल गिरता चला जाता है।

प्रमुख शब्द– सृजनात्मकता, अभिभावक–प्रोत्साहन।

प्रस्तावना :–

मानव सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी है ईश्वर ने मनुष्य को अद्भुत विचारणीय शक्ति युक्त किया है। सृजनात्मकता व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके द्वारा वह किसी नवीन विचार या वस्तु का सृजन करने उसकी खोज करने या उत्पादन करने में कामयाब रहता है। इसमें व्यक्ति की वह योग्यता भी समाहित रहती है जिसके द्वारा वह ज्ञान का पुर्नगठन करता है इसके यह साथ–साथ सृजनात्मकता को प्रशिक्षण द्वारा विकसित भी किया जा सकता है यह एक प्रक्रिया भी है और परिणाम भी। यदि किसी के पास नवीन विचार हैं परन्तु उसे यथार्थ में बदल नहीं सकते तो कहा जायेगा वह मात्र विचारवान है सृजनात्मक नही। विद्यार्थियों को भविष्य की समस्याओं से लड़ने हेतु सृजनात्मक गुण का प्रशिक्षण अत्यन्त आवश्यक है। अतः इसकी अभिवृत्ति का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। इसके प्रमुख अवयवों में हम प्रवाहात्मक विचारधारा, मौलिकता, लचीलापन, विविधता, पूर्ण चिंतन, आत्मविश्वास, संवेदनशीलता, सम्बधों को देखने, बनाने आदि की चर्चा कर सकते हैं। सृजनात्मक शब्द अंग्रेजी के क्रियेटिविटी **(Creativity)** से बना है। इस शब्द के समानान्तर, उत्पादन, रचनात्मकता, डिस्कवरी आदि शब्दों का प्रयोग होता है। सामान्यतः सृजनात्मकता शब्द का प्रयोग मनुष्य की विशिष्ट योग्यता के लिए किया जाता है। किसी भी कार्य की विशिष्ट योग्यता दर्शन के पूर्व अनुभव पर निर्भर करती है भी–कभी हम जिसे सृजनशील मानते है वह विद्यार्थी केवल अन्य विद्यार्थियों से अलग होता है।

स्किनर के अनुसार, ''सृजनात्मक चिंतन, का अर्थ है कि व्यक्ति की भविष्य वाणियाँ या निष्कर्ष नवीन मौलिक, अन्वेषणात्मक तथा असाधारण हो। सृजनात्मक चिंतन वह है जो नये क्षेत्र की खोज करता है नये निरीक्षण करता है और नये निष्कर्ष निकालता है।''

क्रो एवं क्रो के अनुसार, ''सृजनात्मकता को मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक योग्यता बताया है सृजनात्मकता वह क्षमता है जो नये विचारों को उत्पन्न करती है वह पहले से विद्यमान विचारों को अद्वितीय मौलिक, नवीन व उत्पादक बनाती है।''

अध्ययन का महत्व एवं आवश्यकता :—

दर्शन के अनुसार, हम सर्वशक्तिमान परमात्मा के अंश है इसलिए मनुष्यों में सृजनात्मकता पाई जाती है। किसी में उच्च स्तर की सृजनात्मकता होती है तो किसी में निम्न स्तर की। मनुष्य में सृजनात्मकता का गुण प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। आज हमारी शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में सृजनात्मकता ज्ञान, सूचना तथा कौशल के क्षेत्र में पाई जाती है। नवीन तथ्यों, सिद्धान्तों का प्रतिपादन, सूचना ग्रहण करने तथा कराने की नवीन प्रणालियों तथा नवीन वस्तु विचार की प्रकृति सृजनात्मकता के अन्तर्गत आती है।

सृजनात्मकता अभिव्यक्ति के रूप में अपने विशिष्ट सन्दर्भ में हमारे सामने आती है यह अपने मूलतत्वों रंग, रूप, भाव योजना के द्वारा चिंतन को आकार प्रदान करती है। विद्यार्थी के अनुभव सृजनात्मक चिंतन में सहायता प्रदान करते है तथा विद्यार्थियों के लिए प्रेरणाओं के प्राथमिक स्त्रोत बनाते हैं साथ ही विद्यार्थियों को संस्कृति तथा समाज से भी जोड़ते हैं।

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में माता–पिता की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है घर में अभिभावक बालकों के शैक्षिक विकास की प्रक्रिया में इस भूमिका का निर्वाह करते है उनका उनके बालकों के प्रति प्रेम व स्नेह उनकी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि करने में एक प्रेरणादायी तत्व के रूप में प्रकट होता है। अभिभावक विशिष्ट प्रकार से सीखने में सहायता प्रदान करते है उन्हे निर्देशित करते है। किसी नये कार्य को सीखने व भविष्य की कठिनाइयों से उबरने के लिए प्रेरणा बनते है।

अपने परिवार में बालक सुझाव, सहानुभूति व अनुकरण के माध्यम से सीखता है। परिवार में उसे जो कठोर तथा मधुर अनुभव मिलते हैं उनसे ही बालक के व्यक्तित्व का निर्माण होता है जो अभिभावक अपने बालकों के साथ अधिक समय व्यतीत करते हैं उन बालकों का समाजीकरण बेहतर होता है। इसके विपरीत जो अभिभावक अधिक व्यस्त रहते हैं, वहाँ स्नेह के अभाव में विद्यार्थियों, बालकों के समाजीकरण में बाधा आती है। अतः अभिभावकों को अपने दायित्वों में पूर्णरूपेण स्पष्ट होना चाहिए ताकि उनका व्यवहार बालकों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करे और अभिभावक व बालकों के बीच सम्बन्ध अधिक मजबूत हो जाऐं।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर अभिभावक प्रोत्साहन का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर अभिभावक प्रोत्साहन के प्रभाव का अध्ययन।

1.7. अध्ययन की परिकल्पना :–

विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर अभिभावक प्रोत्साहन का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

1.8. अध्ययन का परिसीमांकनः–

- अध्ययन को केवल आगरा शहर तक ही सीमित रखा गया है।
- अध्ययन हेतु माध्यमिक स्तर के कलावर्ग में अध्ययनरत् IX तथा X कक्षा की छात्राएँ सम्मिलित किये गये हैं।

- अध्ययन हेतु केवल उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा संचालित हिन्दी माध्यम के विद्यालयों का चयन किया गया है।

शोध अध्ययन की विधिः–

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा शोध की प्रकृति को देखते हुए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि इसके अन्तर्गत वर्तमान की घटनाऐं तथ्यों व सम्बन्धों के अध्ययन को अधिक बल दिया जाता है और यह भी पता लगाया जाता है कि उनका वर्तमान स्वरूप कैसा है।

बेस्ट, (1963) ने वर्णनात्मक सर्वेक्षण को स्पष्ट करते हुए कहा है कि "वर्णनात्मक अनुसंधान क्या है, का वर्णन एवं विश्लेषण करता है परिस्थितियों अथवा सम्बन्ध जो वास्तव में वर्तमान है, अभ्यास जो चालू करता है विश्वास या विचारधारा अथवा अभिवृत्तियां जो पायी जा रही हैं, जो प्रक्रियाऐं चल रहीं हैं नयी दिशाऐं विकसित हो रही है, उन्हीं से इनका सम्बन्ध है।"

जनसंख्या :–

जनसंख्या के अन्तर्गत श्री के.ना. इण्टर कॉलेज, आगरा, श्री ठा० तेज सिंह इण्टर कॉलेज आगरा के 120 छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श चयन :–

न्यादर्श किसी भी अनुसंधान की आधारशिला है। यह जितनी सुदृढ़ होगी अनुसंधान के परिणाम उतने ही विश्वसनीय तथा परिशुद्ध होगें। न्यादर्श समष्टि का वह अंश होता है जिसमें समष्टि के अध्ययन हेतु समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिनिधित्व दिखाई देता है। न्यादर्श चयन से अनुसंधानकर्ता के समय व शक्ति की बचत होती है तथा व्यापक क्षेत्र की समस्या का अध्ययन सम्भव हो पाया है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद विद्यालयों के 30–30 छात्रों का चयन यादृच्छिकी विधि से किया है।

सांख्यकीय प्रविधियां :–

मध्यमान : प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान का प्रयोग किया गया है। यह प्रदत्त विश्लेषण हेतु समूह में समस्त प्राप्तांकों की संक्षिप्त सूचना प्रदान करता है।

प्रमाणिक विचलन :– प्रदत्तों में निहित विचलनशीलता तथा विभिन्न समूहों की तुलना करने के सन्दर्भ में प्रमाणिक विचलन की गणना की गयी।

टी परीक्षण :– टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है। इसका प्रयोग सार्थकता अंतर को ज्ञात करने के लिए किया गया।

प्रदत्तों के संकलन हेतु शोधार्थिनी द्वारा डॉ० बाकर मेहन्दी द्वारा निर्मित सुजनात्मक चिंतन का अशाब्दिक परीक्षण व डॉ. कुसुम अग्रवाल द्वारा पैरन्टल एन्करेजमेन्ट स्केल न्यादर्श पर प्रकाशित किया गया। संकलित प्रदत्तों से निष्कर्ष प्राप्त करने हेतु वर्णनात्मक तथा निष्कर्षात्मक सांख्यिकी का किया गया है। जिससे प्राप्त विश्लेषण एवं व्याख्या को निम्न बिन्दुओं के क्रम में प्रस्तुत किया गया है।

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर अभिभावक प्रोत्साहन का अध्ययन करना।

विद्यार्थियों के माता–पिता द्वारा प्रोत्साहन का अध्ययन

प्रोत्साहन	समूह			
	छात्र	प्रतिशत	छात्रा	प्रतिशत
उच्च प्रोत्साहन	17	28.33	15	25.00
औसत प्रोत्साहन	30	50.00	29	48.33
निम्न प्रोत्साहन	13	21.66	16	26.67
कुल योग	60	100	60	100

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि 28.33%व 25%छात्र एवं छात्राओं को उच्च स्तर का अभिभावक प्रोत्साहन प्राप्त होता है तथा 50% व 48.33% छात्र एवं छात्राओं को औसत स्तर का प्रोतसाहन प्राप्त होता है। एवं 21. 66% व 26.67% छात्र एवं छात्राओं को निम्न स्तर का प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

विद्यार्थियों के प्रदत्त अभिभावक प्रोत्साहन – प्राप्तांकों के अलग–अलग स्तरानुसार प्रतिशत

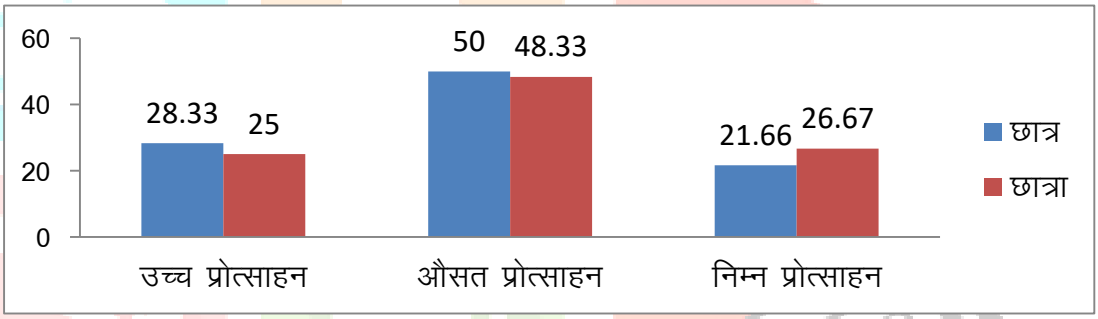

विद्यार्थियों के माता–पिता द्वारा– प्रदान प्रोत्साहन के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन व टी–मान

समूह	कुल संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
छात्र	60	342.12	31.32	0.80	सार्थक अन्तर नहीं है।
छात्राऐं	60	337.26	34.56		

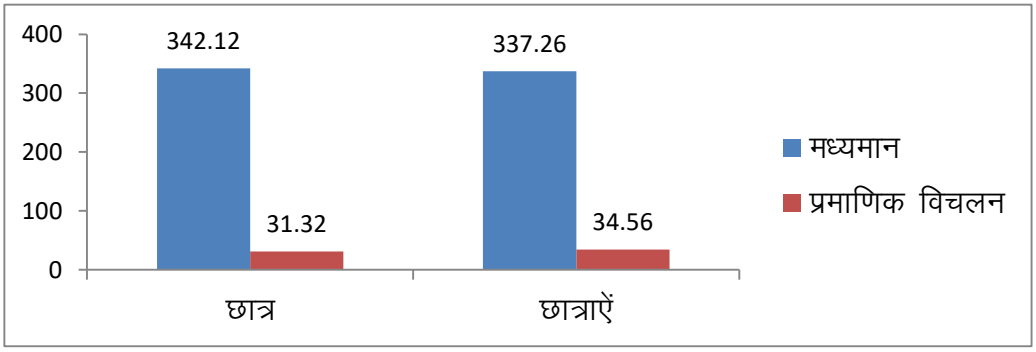

तालिका में यह स्पष्ट होता है कि अभिभावक प्रोत्साहन के छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान लगभग बराबर हैं। स्पष्ट होता है कि छात्र एवं छात्राओं को अभिभावकों द्वारा प्रोत्साहन बराबर दिया जाता है प्रमाणिक विचलन मान से यह स्पष्ट होता है कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में अधिक विचलनशीलता पायी गयी। छात्र एवं छात्राओं के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करने पर पाया गया कि दोनों के मध्य का टी–मान 0.80 है जो यह दर्शाता है कि दोनों समूहों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः अभिभावक प्रोत्साहन में दोनों समूहों के मध्य अन्तर नहीं पाया जाता है। इसका कारण हो सकता है कि शिक्षा के बढ़ते हुऐ स्तर से लोगों में समाजिक कुरीतियों व रूढ़िवादियाँ दूर हुई हैं तथा लोगों में भेदभाव करना कम हुआ है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना

सृजनात्मकता स्तर	छात्र		छात्राऐं		टी–मान
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
उच्च	85.43	17.03	90.63	19.30	1.57
औसत	100.47	20.31	110.28	24.06	2.42
निम्न	175.47	26.25	180.63	31.87	0.94

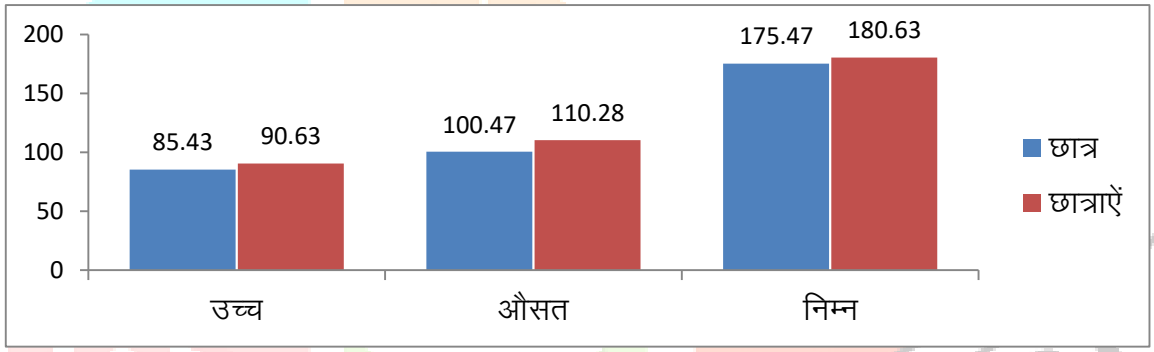

उपर्युक्त तालिका का गहनता से अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि उच्च सृजनात्मकता स्तर वाले छात्र एवं छात्राओं के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करने पर पाया गया कि दोनों समूह में क्रान्तिक अनुपात 1.57 है जो 0.05 स्तर पर दिये गये मान से कम है अतः छात्र एवं छात्राओं में उच्च सृजनात्मकता में अन्तर नहीं है।

औसत सृजनात्मकता स्तर वाले छात्र एवं छात्राओं के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करने पर पाया गया कि दोनों समूहों में क्रान्तिक अनुपात 2.42 है जो कि 0.05 स्तर पर दिये गये मान से अधिक है अतः औसत स्तर पर छात्र एवं छात्राओं में अन्तर होता है निम्न स्तर वाले छात्र एवं छात्राओं के मध्य तुलना करने पर पाया गया कि दोनों समूहों में क्रान्तिक है अतः छात्र एवं छात्राओं में निम्न स्तर पर अन्तर नहीं होता है। अतः कहा जा सकता है छात्र एवं छात्राऐं निम्न स्तर पर अन्तर नहीं होता है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर अभिभावक प्रोत्साहन के प्रभाव का अध्ययन

उपर्युक्त अध्ययन करने हेतु उच्च निम्न औसत अभिभावक प्रोत्साहन प्राप्त विद्यार्थियों समूह के सृजनात्मकता के प्राप्तांकों का मध्यमान प्रामाणिक विचलन तथा टी–मान ज्ञात किया गया है।

माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर अभिभावक प्रोत्साहन के प्रभाव से सम्बन्धित प्राप्तांकों के सांख्यिकीय मान

क्र.सं.	प्रोत्साहन स्तर	सांख्यिकीय मान				
		कुल संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मान	सार्थक मान
1	उच्च	32	110.88	25.69	4.81	.05
	निम्न	29	145.21	29.66		
2	उच्च	32	110.88	25.69	2.61	.05
	औसत	59	126.165	28.06		
3	निम्न	29	145.21	29.66	2.88	.05
	औसत	59	126.165	28.06		

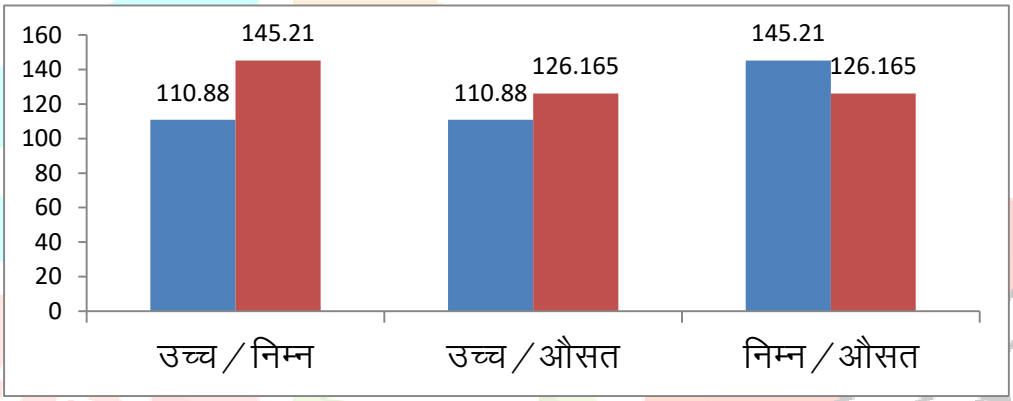

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्च निम्न व उच्च औसत, निम्न औसत प्राप्त प्रोत्साहन विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की सांख्यिकीय गणना की गई जिसका टी–मान उच्च व निम्न का 4.81 आया व उच्च व औसत का 2.62 तथा निम्न–औसत 2.88 मान आया जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। माध्यमिक स्तर पर अभिभावक प्रोत्साहन द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्कता पर प्रभाव पड़ता है। अतः कहा जा सकता है जो अभिभावक अपने बच्चों को अधिक प्रोत्साहन देते हैं उन बच्चों की सृजनात्कता उच्च होती है बजाए उनके जिनको प्रोत्साहन कम प्राप्त होता है।

राज, जी, ने विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय पर माता–पिता के प्रोत्साहन के प्रभाव का अध्ययन –इन्होंने पाया कि जिन बालकों को माता–पिता द्वारा उच्च कोटि का प्रोत्साहन उपलब्ध होता है वे आत्मप्रत्यय के सभी आयामों में श्रेष्ठ होते हैं। अपेक्षाकृत उन बालकों के जिन्हें माता–पिता से निम्न स्तर का प्रोत्साहन मिलता है।

शैक्षिक उपादेयता : अभिभावक प्रोत्साहन बालको को संवेगात्मक रूप से सशक्त बनाये रखने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सामान्यतः अभिभावक अपने व्यवहार की महत्व को नही समझते है। विशेष तया शैक्षिक, व्यवहार तथा बालक के व्यवहार को स्वरूप प्रदन करने में वे अधिकांशत अपने बालकों के प्रति या तो अति सुरक्षात्मक हो जाते है या उनकी अवहेलना करते है। यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि अत्यधिक स्वतंत्रता बालक के विकास को बाधित करती है। वही कठोर अनुशासन बालक व्यवहार को कुंठित करता है। तथा वह यह समझते हैं कि उनमें स्वतंत्र रूप से कार्य करने की क्षमता नही है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि माता–पिता द्वारा बालकों को उचित मार्गदर्शन दिया जाये, जिससे उनमें सही समझ एवं अनुभव विकसित हो सके। यदि माता–पिता बालकों को सुझाव व प्रोत्साहन देने की प्रक्रिया अपनायी

जाये तो, उनकी क्षमता का स्वतः विकास हो सकेगा। प्रस्तुत शोध के माध्यम से इस दिशा में पर्याप्त ध्यान देकर बालकों को सही दिशा में अग्रसर करेंगें। तथ्यों का अनुकरण, दूसरों के अनुभवों की नकल करना या निष्क्रिय भाव से ज्ञान प्राप्त करना आदि सृजनात्मक भाव से ज्ञान प्राप्त करना आदि सृजनात्मक अभिव्यक्ति में बाधक तत्वों से स्वयं को दूर रखते हुए अभिभावकों व शिक्षकों के सहयोग से अपनी प्रत्येक जिज्ञासा को शांत करने का व प्रत्येक कार्य में उत्साह व मौलिकता का परिचय देने का प्रयास करना चाहिए।

निष्कर्ष – निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है जिन छात्र एवं छात्राओं को उच्च प्रोत्साहन प्राप्त होता है उनकी सृजनात्मकता अधिक होती है तथा जिन विद्यार्थियों को कम प्रोत्साहन कम प्राप्त होता है उनमें सृजनात्मकता कम पायी जाती है इसका कारण यह है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं। यह समय संघर्ष एवं तनाव का काल होता है। इस समय संवेग अधिक हावी रहते हैं। इस समय विद्यार्थियों को सही निर्देशन की आवश्यकता होती है जिसमें अन्य कारणों के साथ–साथ अभिभावक प्रोत्साहन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः अभिभावकों को बच्चों को सही निर्देशन देना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- पाठक पी.डी. (2011) ''भारतीय शिक्षा और संरचनाऐं'' आगरा : श्री विनोद पुस्तक मंदिर।
- कौल लोकेश (2005) शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिकेशन।
- बेस्ट, जे. डब्लयू (1963) रिसर्च इन एजूकेशनल, मुम्बई प्रिंटिग हॉल ऑफ इण्डिया प्र.लि.।
- भारतीय आधुनिक शिक्षा, त्रैमासिक वर्ष 25, संयुक्तांक 1–2, 2006
- भारद्वाज विनोद, कलाऐं आस–पास दिल्ली, ललित कला अकादमी।
- डॉल्फिन्ज, रिक, ट्यून, लरिस, वेनडेर (1 जनवरी 2013) न्यू मैंटरालिज्म इन्टरव्यूज एण्ड कैटोग्रफीज। ओपन ह्यूमनिटि प्रेस ISBN 9781607852810।
- डॉ शर्मा रितु (2016) समकालीन भारत में शिक्षा, राखी प्रकाशन प्रा.लि।
- सी.ब्रैड्रोटीस सीवी ऑन हर बेवसाइट
- हंसराज (2019) उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं की सृजनात्मकता का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव अप्रकाशित अध्ययन, एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, डी.ई.आई. आगरा।
- सांगवन, एस. (2022) बालको की बोधगम्यता पर अभिभावक संबंधों का प्रभाव, डिजर्टेशन सारांश (ए.यू.एम.आई)